शिवाजी विश्वविद्यालय
हिंदी विभाग
कोल्हापुर.

डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्.ए.,बी.एड्.,पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि कु.शैलजा धोंडिराम गवळी द्वारा लिखित **''साधुराम दर्शक की श्रेष्ठ कहानियों का अनुशीलन''('मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ', 'एक और सावित्री','धारा बहती रही')** के संदर्भ में शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

2/4/07

(डॉ.अर्जुन गणपति चव्हाण)

Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University
Kolhapur-416004

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : - 2 APR 2007

डॉ.भारती विजयराव शेळके
एम.ए.,एम्.फिल.,पीएच्.डी.,डी.एच.ई.
अधिव्याख्याती(वरिष्ठ श्रेणी),
हिंदी विभाग,
कमला महाविद्यालय, कोल्हापुर।

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि, कु.शैलजा धोंडिराम गवळी ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल.(हिंदी) उपाधि के लिए **''साधुराम दर्शक की श्रेष्ठ कहानियों का अनुशीलन''('मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ', 'एक और सावित्री','धारा बहती रही')** के संदर्भ में लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक एवं पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है। शोध-छात्रा के प्रस्तुत शोध-कार्य के बार में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करती हूँ।

शोध निर्देशिका

2.4.2007

(डॉ.भारती विजयराव शेळके)

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 2 APR 2007

प्रख्यापन

''साधुराम दर्शक की श्रेष्ठ कहानियों का अनुशीलन''(‘मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ’, ‘एक और सावित्री’,‘धारा बहती रही’) के संदर्भ में यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है जो एम्.फिल.(हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध छात्रा

S.D.Gavli

(कु.शैलजा धोंडिराम गवळी)

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 2 APR 2007

❋ प्राक्कथन ❋

* प्राक्कथन *

मैंने साधुराम दर्शक जी के 'मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ' कहानी संग्रह की ''जिंदा-मुर्दा' तथा 'पंछी बाबा' कहानियों को पढ़ा तो मैं मंत्रमुग्ध तो हो गई लेकिन उससे बढ़कर उन कहानियों ने मुझे अंतर्मुख किया। समाज की विदारक यथार्थता ने मुझे अंतर्बाहय हिला दिया और एक के बाद एक उनकी कहानियाँ पढ़ती चली गई। मैंने निश्चय किया कि प्रेमचंद जी की परंपरा को बरकरार रखनेवाले साधुराम दर्शक जी पर अभी तक किसी ने काम नहीं किया यह कार्य मेरे हाथों संपन्न होगा तो मैं भाग्यशाली रहूँगी अतः मैंने गुरूवर्या डॉ.सौ.भारती शेळके जी से इस संदर्भ में विचार-विमर्श किया । उन्होंने मुझसे साधुराम दर्शक की कहानी कला की विशेषताओं के संदर्भ में चर्चा की। तत्पश्चात मैंने प्रस्तुत विषय का चयन करते हुए ''साधुराम दर्शक की श्रेष्ठ कहानियों का अनुशीलन''('मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ', 'एक और सावित्री','धारा बहती रही') के संदर्भ में इस विषय को अपने लघु शोध-प्रबंध के लिए निश्चित किया।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए।

1. साधुराम दर्शक जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की कौन कौनसी विशेषताएँ हैं?
2. साधुराम दर्शक जी की कहानियों की कथ्यगत व चरित्रगत विशेषताएँ कौन कौनसी हैं?
3. साधुराम दर्शक जी की कहानियों में चित्रित समस्याएँ कौनसी होगी एवं उनकी श्रेष्ठ कहानियों की विशेषता क्या होगी?
4. साधुराम दर्शक जी ने उपेक्षित तथा निम्नवर्गीय जीवन का उद्घाटन इतनी बारीकी से एवं सूक्ष्मता से किस प्रकार किया है?
5. साधुराम दर्शक की शिल्पगत उपलब्धियाँ कौनसी हैं?

साधुराम दर्शक की कहानियों का अध्ययन करते समय मैंने उपर्युक्त प्रश्नों का समाधान ढूँढने का प्रयास करते हुए उसे उपसंहार में प्रस्तुत किया है।

❖ **प्रथम अध्याय : 'साधुराम दर्शक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत साधुराम दर्शक का व्यक्तित्व परिचय जिसके अंतर्गत जन्म, माता-पिता, परिवार, विवाह, संतान, शिक्षा एवं नौकरी, व्यक्तित्व की विशेषताएँ, आदि का संक्षेप में विवचेन किया है। कृतित्व के अंतर्गत कहानी संग्रह, उपन्यास, सम्मान एवं पुरस्कारों का परिचय दिया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

❖ **द्वितीय अध्याय : 'साधुराम दर्शक की कहानियों का कथ्य'**

प्रस्तुत अध्याय में कथावस्तु के कोशगत अर्थ'कथ्य' की परिभाषा, महत्त्व स्पष्ट किया है। साथ ही विभिन्न कोशों के अंतर्गत कथ्य के संदर्भ में दिए गए 'अर्थ' को बताया है। तत्पश्चात् विवेच्य कहानी संग्रह के कहानियों के कथ्य के आधार पर कथ्यगत विषय वैविध्य का विस्तृत विवेचन किया गया है। अंत में प्राप्त निष्कर्ष दर्ज है।

❖ **तृतीय अध्याय : 'साधुराम दर्शक की कहानियों में चित्रित पारिवारिक जीवन'**

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत 'परिवार' शब्द कोशगत अर्थ, परिभाषा, स्वरूप, महत्त्व, सफल-असफल दांपत्य जीवन, पारिवारिक जीवन के विविध आयाम उसमें माता-पिता और संतान संबंध, पिता-पुत्र संबंध, पिता-पुत्री संबंध, माता-पुत्र संबंध, माँ-बेटी संबंध, भाई-बहन संबंध, सास-बहू संबंध, ससुर-बहू संबंध, ननंद-भाभी संबंध, दादी-पोता संबंध इन संबंधों के कटु तथा मधुर संबंधों का विवेचन किया है। अंत में निष्कर्ष दर्ज है।

❖ **चतुर्थ अध्याय : 'साधुराम दर्शक की कहानियों में चित्रित समस्याएँ'**

प्रस्तुत अध्याय में समस्या का अर्थ एवं परिभाषा देकर उसका विवेचन किया है तथा समस्याओं के अंतर्गत वैवाहिक समस्या, पारिवारिक समस्या, नारी समस्या आदि का विवेचन किया है एवं सामाजिक समस्या के अंतर्गत अंधविश्वास, धार्मिक, भ्रष्टाचार, शोषण आदि समस्याओं का भी

विश्लेषण किया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

❖ पंचम अध्याय : 'साधुराम दर्शक की कहानियों का शिल्प'

प्रस्तुत अध्याय में शिल्प के कोशगत अर्थ, परिभाषा, महत्त्व आदि को स्पष्ट किया गया है। शिल्पगत विशेषताओं का विश्लेषण छः तत्त्वों में किया गया है। साथ ही आत्मकथात्मक शैली, पात्रात्मक शैली, दृश्यशैली, स्वप्न शैली, पूर्वदिप्ती शैली, वर्णनात्मक शैली, पात्रहीन शैली आदि का शैली अंतर्गत विवेचन किया गया है। अंत में निष्कर्ष दर्ज हैं।

अंत में उपसंहार दिया है जिसमें पूर्वनियोजित अध्यायों का निचोड़ प्रस्तुत किया गया है।

❖ लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता :

1. साधुराम दर्शक जी की साहित्यिक रचना पर इससे पहले कहीं पर भी शोधकार्य नहीं हुआ था अतः उनके कहानी साहित्य पर हुआ यह प्रथम समीक्षात्मक शोधकार्य करने का मेरा प्रयास मेरे लिए अनुसंधान कार्य की प्रथम मौलिकता रहेगी।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में साधुराम दर्शक की कहानियों में चित्रित समस्याओं की प्रासंगिकता अत्याधिक समीचीन हैं।
3. वर्तमान युग के समाज का हूबहू सजीव चित्रण करते हुए उपेक्षित पीड़ित निम्नवर्ग की यातनाओं का, पीड़ाओं एवं युगानुकूल समस्याओं का चित्रण करनेवाले साधुराम दर्शक जी प्रति प्रेमचंद अनुभव होते है।

✠✠✠✠

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत अनुसंधान के दौरान प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से विभिन्न महाविद्यालय, विद्वजन एवं स्नेहियों का प्रोत्साहन एवं सहयोग मिला उन सभी का आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

विशेष रूप से स्वयं साधुराम दर्शक जी को हृदय से धन्यवाद देना चाहती हूँ। जब मैंने उन्हें सूचित किया कि मैं उनके कहानी साहित्य पर अनुसंधान कार्य करना चाहती हूँ तो उन्होंने मुझसे पत्राचार करते हुए मुझे उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संदर्भ में सामग्री प्रदान की। अतः सर्वप्रथम मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

यह लघु-शोध प्रबंध श्रद्धेय आदरणीय गुरूवर्या डॉ.सौ.भारती वि. शेळके जी हिंदी विभाग, कमला महाविद्यालय, कोल्हापुर के उदार एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के आत्मीय एवं प्रेरक निर्देशन का फल है। आपका मिला हुआ आत्मीय और मौलिक मार्गदर्शन अविस्मरणीय है। अतः मैं आपके तथा आपके परिवार प्रति कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। आपके इस अनुग्रह से ऋणमुक्त होना मेरे लिए असंभवनीय है। उनके स्नेह, निर्देशन और आशीर्वाद से और भी लाभान्वित होने की निरंतर अभिलाषा रखती हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष श्रदधेय आदरणीय डॉ.अर्जुन चव्हाण जी तथा पूर्वविभागाध्यक्ष गुरूवर्य डॉ.पांडुरंग पाटील जी दोनों की मैं ऋणी हूँ। साथ ही डॉ.सुलोचना आंतरेड्डी मॅडम, डॉ.शोभा निंबाळकर मॅडम, डॉ.पद्मा पाटील मॅडम इनके सहयोग के लिए भी मैं ऋणी हूँ।

मेरे जीवन का कोई भी कार्य मेरे माता-पिता के बिना अधूरा है। जो स्वयं धूप में रहकर हमें छाया देने का प्रयास करते हैं। साथ ही मेरी दादी माँ, नाना-नानी, चाचा-चाची, मामा-मामी आदि का आशीर्वाद तथा सहयोग मिला उनके ऋण का बोझ हमेशा मेरे सर पर रहेगा। मेरे भाई संदीप, नागसेन,

स्वप्निल, अजित, प्रतिक, अमोल तथा मेरी बहनें प्रज्ञा, स्मिता, विद्या, सिमा, आम्रपाली, हर्षदा आदि का प्रेम तथा साहय मेरे लिए हमेशा महत्त्वपूर्ण रहा हैं।

जिनका साथ मेरे लिए हमेशा प्रेरणादायी रहा है वह मेरी सहेलियाँ पद्मावती, गौतमी, छाया, रिना, सुषमा, रूपाली, शीला, प्रिति, सुवर्णा, प्रगती, वैशाली, स्मिता, अर्चना मेरे मित्र वालचंद, दिपक, प्रकाश, अमोल, प्रविण आदि का सहयोग मैं भूल नहीं सकती। अतः इन सबका आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

इस लघुशोध प्रबंध को संपन्न करने में निम्नांकित ग्रंथालयों का बहुमूल्य योगदान रहा है।

1. बॅ.बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।
2. कमला महाविद्यालय, कोल्हापुर।
3. महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर।

इन ग्रंथालयों से संबंधित समस्त कर्मचारियों की भी मैं हृदय से आभारी हूँ। मैं उन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग इस शोधकारी के लिए किया है।

इस शोध ग्रंथ के रूप को आकार प्रदान करनेवाले टंकलेखक श्री मिलिंद भोसले जी की मैं विशेष रूप से आभारी हूँ। उनके अथक परिश्रम से समय पर कार्य संपन्न करने में बड़ा सहयोग मिला।

अतः मैं एक बार फिर समस्तजनों को मनःपूर्वक धन्यवाद देते हुए उन ज्ञात-अज्ञात व्यक्तियों का जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहकार्य मेरे लिए अमूल्य सिद्ध हुआ, उनकामैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ और इस लघुशोध प्रबंध को विद्वानों के समक्ष परिक्षणार्थ अत्यंत विनम्रता से प्रस्तुत करती हूँ।

शैलजा धोंडिराम गवळी
शोध छात्रा